अनुभूति अंक 18

तेल उद्योग विकास बोर्ड
(पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय)

अनुभूति

अंक 18

संरक्षक

(सचिव, तेल उद्योग विकास बोर्ड एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

संपादक मंडल

श्री गौतम सेन

(वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी)

श्री गणेश डोभाल

(उप मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी)

श्री राजेश सैनी

(उप मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी)

संपादक

श्रीमती ज्योति शर्मा

संपादन सहयोग

श्री महेन्द्र प्रताप सिंह

दूरभाष सं0.- 0120-2594602 , 2594607, 2594612,

फैक्स: 0120-2594630

ई-मेल:hindi.oidb@nic.in

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1	लेख	
•	क्या आप जानते है- राष्ट्रगान जन-गण-मन॥	1
•	देवभूमि उत्तराखंड	3
•	सतर्कता जागरूकता	6
•	आओ पेड़-पौधे लगाकर प्रदूषण को दूर भगाएं	8
•	जल संरक्षण	10
2	कविताएं	
•	हिन्दी वर्णमाला का क्रम से कवितामय में प्रयोग	12
•	सजल है कितना सवेरा, छोड़ दीजिए	13
•	प्रथम परमवीर चक्र मेजर सोमनाथ शर्मा	14
•	सबसे बड़ा दहेज	15
•	कोशिश कर, हल निकलेगा, मेकअप	16
•	पता है?, अकेलापन बनाम एकान्त	17
•	प्रकृति का स्वच्छंद स्वरूप, आहिस्ता चल जिन्दगी	18
•	समय, पर्यावरण बचाओ	19
•	प्लास्टिक को कहे ना, मोबाइल	20
•	लोरी	21
•	युद्ध का बदलता स्वरूप	23
•	मेरे रिश्ते	24
3	प्रेरक प्रसंग	25-31
4	विविध	
•	राजभाषा गतिविधियां	32
•	गजब के चुटकुले	38

" अनुभूति" प्रतिवर्ष तेल उद्योग विकास बोर्ड (तेउविबो), प्लॉट सं0.2, सेक्टर 73, नोएडा से प्रकाशित की जाती है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के कथनों और मतों के लिए बोर्ड उत्तरदायी नहीं है।

सचिव की ओर से

संदेश

किसी भी देश की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में उस देश की भाषा की अहम भूमिका होती है। भाषा मनोभावों को प्रकट करने के साथ-साथ संपूर्ण राष्ट्र की एकता और अखंडता की महत्वपूर्ण कड़ी होती है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में आम जनमानस और सरकार के बीच की भाषा ही संपर्क भाषा हो सकती है इसीलिए हिंदी को भारत की संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया।

भारत देश अपनी आजादी की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में "आजादी का अमृत महोत्सव" मना रहा है। जब यह महोत्सव "जन महोत्सव, जन के द्वारा" अभियान के तहत जनभागीदारी की भावना से मनाया जा रहा है तो इसे "जनता की भाषा" से अलग नहीं रखा जा सकता। हिंदी ही हमारे देश में सामान्य संचार की भाषा है जन–जन की भाषा है। हमारा बोर्ड माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान के प्रयोग से प्रेरणा लेते हुए 12 प्र(प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास) की रणनीति को लेकर अग्रसर हो रहा है। यह बड़े हर्ष का विषय है कि तेल उद्योग विकास बोर्ड का चयन लगातार दो वर्षों से राजभाषा कीर्ति (प्रथम) पुरस्कार वर्ष 2019–20 एवं 2020–21 के लिए किया जा रहा है, जिसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

तेल उद्योग विकास बोर्ड जहां एक ओर अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहा है, वही राजभाषा नीति के शत-प्रतिशत कार्यान्वयन के लिए भी प्रयासरत रहता है।मैं हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए आप सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के समर्पण प्रयासों की प्रशंसा करता हूं और कामना करता हूं कि आप सभी के प्रयासों से बोर्ड हर वर्ष राजभाषा की बुलंदियों को छूता रहे।

लगातार दो वर्ष राजभाषा कीर्ति (प्रथम) पुरस्कार प्राप्त करने पर शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. नवनीत मोहन कोठारी, संयुक्त सचिव (एमएंडजीपी),
पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय एवं सचिव, तेल उद्योग विकास बोर्ड

संपादकीय

आजादी के इस अमृत महोत्सव के अवसर पर जहां हम स्वाधीनता संग्राम की भावना, उनका त्याग, साक्षात अनुभव के साथ–साथ शहीदों को श्रद्धांजलि एवं सपनों के भारत की संकल्पना को याद कर रहे हैं, वही हम मानते है कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संपूर्ण देश में भावनात्मक एकता को स्थापित करने में हिंदी ने एक सशक्त कड़ी के रूप में काम किया है। इतिहास गवाह है कि देश की आजादी से पूर्व ही विभिन्न जन आंदोलन के जरिए संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने अपना स्थान प्राप्त कर लिया था और आज हिन्दी देश के प्रत्येक हिस्से में बोली और समझी जा रही है। हिंदी ने सभी भारतीयों को एक सूत्र में पिरोकर सदैव अनेकता में एकता की भावना को सिद्ध किया है। भारत वासियों को एकता के धागे में बांधे रखने में हिन्दी का बड़ा योगदान रहा है। भारतीयों के बीच व्यवहार की भाषा के रूप में हिंदी सदैव ही सर्वोपरि भाषा रही तभी तो संविधान सभा में सर्वसम्मति से इसे राजभाषा का भी दर्जा दिया गया।

राजभाषा संकल्प के अनुसार हमें हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास की गति को तीव्र करना है। तेल उद्योग विकास बोर्ड, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय और पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा जारी दिशा निर्देशों का अनुपालन करने में सदैव प्रयासरत है। सरकारी काम अधिक से अधिक हिंदी में हो, इसके लिए समय-समय पर आवश्यक कदम उठाए जाते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान से प्रेरणा लेते हुए 12 प्र(प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास)की रणनीति को लेकर बोर्ड अग्रसर हैं। तेल उद्योग विकास बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में भी सजगता से कार्य कर रहा है। राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए बोर्ड, सदैव प्रयत्नशील रहता है। राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित पुरस्कार योजना के अंतर्गत तेल उद्योग विकास बोर्ड को लगातार दो वर्ष से वर्ष 2019–20 एवं 2020–2021 के लिए प्रथम कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करना हमारी विशेष उपलब्धि है। बोर्ड में नियमित अंतराल पर कार्यशाला, राजभाषा संगोष्ठी, कवि सम्मेलन एवं हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जाता है और प्रतिवर्ष राजभाषा पत्रिका "अनुभूति" के प्रकाशन से बोर्ड में राजभाषा के प्रचार–प्रसार किया जाता है।

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं रचनाएंकार्मिकों द्वारास्वरचित एवं संकलित हैं साथ ही पत्रिका में ओआईडीबी परिवार के बाहर से व्यक्तियों की कहानी एवं कविताएं भी प्रकाशित की जा रही हैं। हम उनका भी विशेष आभार व्यक्त करते है। हम सभी के प्रयास की सराहना करते हैंऔर अनुभूति का नवीन अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

"कभी अपने शब्दों को सवार लेते हैं,
कभी अपनी लेखनी को धार देते हैं,
कुछ मन के कुछ अनकहे विचार कहते हैं,
हम हर अनुभूति को अपनी पंक्ति में उतार लेते हैं"

पत्रिका का नया अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है, आशा है इस वर्ष भी पत्रिका को आपका पूर्ण सहयोग मिलेगा।

संपादकमंडल

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

तेल उद्योग विकास बोर्ड (ओआईडीबी) को वर्ष 2019-20 एवं 2020-21 के लिए 'क' क्षेत्र में स्थित बोर्ड और स्वायत्त निकायों आदि के बीच उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार, माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह जी द्वारा 14 सितम्बर, 2021 को हिन्दी दिवस के अवसर पर विज्ञान भवन, नई दिल्ली में प्रदान किया गया।

तेल उद्योग विकास बोर्ड की ओर से माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह जी से पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. निरंजन कुमार सिंह, सचिव तेल उद्योग विकास बोर्ड

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित राजभाषा हिंदी के , सफल कार्यान्वयन के लिए

12 “प्र” की रूपरेखा

❖	प्रेरणा	Inspiration and Motivation
❖	प्रोत्साहन	Encouragement
❖	प्रेम	Love and affection
❖	प्राइज़ अर्थात पुरस्कार	Rewards
❖	प्रशिक्षण	Training
❖	प्रयोग	Usage
❖	प्रचार	Advocacy
❖	प्रसार	Transmission
❖	प्रबंधन	Administration and management
❖	प्रमोशन अर्थात पदोन्नति	Promotion
❖	प्रतिबद्धता	Commitment
❖	प्रयास	Efforts

क्या आप जानते है

राष्ट्रगान जन–गण–मन के एक-एक शब्द का मतलब

हमारे देश का राष्ट्र गान ना केवल हमारी पहचान है बल्कि हमारी आन-बान-शान का प्रतीक भी है। पंडित रविंद्रनाथ टैगोर की कलम से लिखे राष्ट्र गान जनगणमन को यूनेस्को की ओर से विश्व का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रगान करार दिया गया है, जो कि हर भारतीय के लिए गौरव की बात है। भारत का राष्ट्र गान'जन गण मन' मूलतः बांग्ला भाषा में लिखा गया था, जिसे भारत सरकार द्वारा 24 जनवरी 1950 को राष्ट्रगान के रूप में अंगीकृत किया गया था। गायन की अवधि लगभग 52 सेकंड निर्धारित है और जब राष्ट्र गान गाया या बजाया जाता है तो श्रोता सावधान की मुद्रा में खड़े होते है लेकिन हममें से बहुत कम लोगों को पता है कि राष्ट्रगान में लिखे एक-एक शब्द का मतलब क्या है।

शब्द =अंग्रेजी अर्थ= हिंदी पर्यायवाची

जन= People= लोग
गण= Group= समूह
मन= Mind = दिमाग
अधिनायक= Leader= नेता
जय हे= Victory= जीत
भारत= India= भारत
भाग्य= Destiny= किस्मत
भाग्य= Destiny= किस्मत
विधाता= Disposer= ऊपरवाला
पंजाब= Punjab= पंजाब
सिंधु= Sindhu =सिंधु
गुजरात= Gujarat= गुजरात
बंगा= Bengal= बंगाल
विंध्य= Vindhyas= विन्धयाचल
हिमाचल= Himalaya= हिमालय
यमुना= Yamuna = यमुना
गंगा= Ganges = गंगा
उच्छलय= Moving= गतिमान
जलधि= Ocean = समुद्र
तरंगा= Waves = लहरें (धाराएं)
तब = Your = तुम्हारा
शुभ = Auspicious = मंगल
नामे = name = नाम
जागे= Awaken = जागो

मराठा= Maratha= मराठा (महाराष्ट्र)
द्रविण= South= दक्षिण
उत्कल= Orissa= उड़िसा
मांगे = Ask = पूछो
गाहे = Gaahe = गाओ
तब = Your = तुम्हारी
जय = Victory = जीत
गाथा = Song = गीत
जन = People = लोग
गण = Group = समूह
मंगल = Fortune = भाग्य
दायक = Giver = दाता

तब = Your = तुम्हारा
शुभ = Auspicious = मंगल
आशीष= Blessings = आशीर्वाद
जय हे = Victory Be = जीत
भारत = India = हिंदुस्तान
भाग्य = Destiny = किस्मत
विधाता = Dispenser= ऊपरवाला
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।= Victory, Victory, Victory, Victory Forever =
विजय, विजय, विजय, विजय हमेशा के लिए ।।।
जय हिंद = JAIHIND

देवभूमि-उत्तराखंड

हिमालय की गोद में स्थित उत्तराखंड राज्य की भूमि बहुत ही पावन एवं पवित्र मानी जाती है। मुझे गर्व है अपनी मातृ भूमि पर, मेरा सम्पूर्ण बचपन इसी की गोद में पला बढ़ा। यहाँ पर अनेक देवी-देवताओं का निवास स्थान है। उत्तराखंड राज्य में देवों के देव महादेव का निवास स्थान कैलाश है। उत्तराखंड राज्य में चार प्रसिद्ध धाम भी मौजूद है, तो इसके साथ–साथ महादेवी गंगा का उद्गम स्थल भी इसी राज्य में स्थित है। उत्तराखंड राज्य अपनी पावन धरती एवं प्राकृतिक सुंदरता के कारण संपूर्ण विश्व भर में चर्चा का विषय बना रहता है और देवभूमि होने के कारण भारत के सभी राज्यों में अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। देवभूमि होने के कारण उत्तराखंड राज्य में स्थित फूलों की घाटियां अपनी सुंदरता एवं प्राकृतिक दृश्य के कारण संपूर्ण विश्व भर में अपनी एक अलग पहचान बना चुकी हैं और यही कारण है, कि इन घाटियों के साथ-साथ उत्तराखंड के कुछ अन्य क्षेत्रों को विश्व की धरोहर के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त हो गई है। उत्तराखंड राज्य के सभी निवासियों को बहुत ही खुश किस्मत माना जाता है और ऐसा भी माना जाता है, कि यहां के ज्यादातर लोग अपने लक्ष्य को प्राप्त ही कर लेते हैं। उत्तराखंड राज्य, कई प्रकार के ऐतिहासिक, प्रशासनिक और भौगोलिक कारणों के चलते क्षेत्रीय स्तर पर मुख्य रूप से दो भागों में बंटा हुआ है जिसमें से एक है 'कुमाऊँ' और दूसरा है 'गढ़वाल'। इस समय उत्तराखंड में कुल 13 जिले हैं जिनमें से कुमाऊँ में अल्मोड़ा, चम्पावत, बागेश्वर, नैनीताल, पिथौरागढ़ और उधम सिंह नगर के नाम से कुल 6 जिले आते हैं। इन 6 जिलों या इन क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों को ''कुमाऊँनी'' के तौर पर पहचाना जाता है और यहां बोले जाने वाली भाषा को भी कुमाऊँनी कहा जाता है जबकि उत्तराखंड का दूसरा क्षेत्र जो 'गढ़वाल' के नाम से पहचाना जाता है और इन क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों को ''गढ़वाली'' के तौर पर पहचाना जाता है । ऐतिहासिक तथ्य बताते हैं कि इसका यह 'गढ़वाल' नाम परमार शासकों की देन है। इस 'गढ़वाल' अंचल या गढ़वाल मंडल में चमोली, देहरादून, हरिद्वार, पौड़ी गढ़वाल, रुद्रप्रयाग, टिहरी गढ़वाल और उत्तरकाशी नाम से कुल 7 जिले आते हैं।

उत्तराखंड राज्य अपनी पावन धरती एवं प्राकृतिक सुंदरता वाले क्षेत्रों के कारण संपूर्ण भारतवर्ष के अन्य राज्यों में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए है।

प्राकृतिक सुंदरता - उत्तराखंड राज्य की प्राकृतिक सुन्दरता अवर्णनीय है, यह हिमालय श्रृंखला के दक्षिणी ढलान पर एक बहुत ही सुंदर क्षेत्र में बसा हुआ है। उत्तराखंड राज्य में मौसम और वनस्पति में ऊंचाई के साथ-साथ काफी ज्यादा परिवर्तन देखने को मिलता है। यहाँ एक ओर विश्व की सर्वोच्च ऊंचाई पर स्थित हिमनद है, तो इसके निचले स्थानों पर 3000 मीटर से लेकर 5000 मीटर तक घास एवं झाड़ियों से ढके मैदान स्थित है। उत्तराखंड राज्य के सबसे

ऊपरी हिस्से पर बर्फ और छोटे-छोटे पेड़ पौधों से युक्त नगी चोटियां, तो इसके ठीक विपरीत निचले क्षेत्रों में विशाल उष्णकटिबंधीय वन मौजूद हैं। यही विविधता इसकी प्राकृतिक छटा को मनोहर बना देती है।

प्रमुख भाषाएं–सामान्य रूप से आप सभी लोगों को उत्तराखंड राज्य में बोली जाने वाली मुख्य रूप से 3 भाषाएं मिलेंगे पहली **गढ़वाली,** दूसरी भाषा **जौनसारी** और तीसरी भाषा **कुमाऊनी** बहुत ही प्रचलित रूप से बोली जाती हैं। **भारतीय लोक भाषा सर्वेक्षण** के कथन अनुसार उत्तराखंड राज्य में कुल 13 भाषाएं बोली जाती हैं। इन सभी *भाषाओं में मुख्य रूप से* जौनसारी कुमाऊनी जौनपुरी और गढ़वाली भाषा ही मुख्य रूप से बोली जाती है।

प्रमुख पर्यटन स्थल– वैसे तो उत्तराखंड राज्य में बहुत से प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर पर्यटन स्थल जैसे– देहरादून, मसूरी, नैनीताल, रानीखेत, बागेश्वर, जोशीमठ आदि देखने को मिलेंगे, लेकिन इसकी धरती पर बहुत से प्रसिद्ध धार्मिक स्थल होने के कारण इसे देवभूमि का नाम दिया गया।
उत्तराखंड के मुख्य चार धाम:- भारतीय धर्म एवं ग्रंथों के अनुसार यमुनोत्री, गंगोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ इत्यादि चार मुख्य धाम हिंदुओं के सबसे पवित्र स्थान होने के कारण पर्यटन स्थल की श्रेणी में सबसे ऊपर आते हैं।

आपको यह जानकर हैरानी होगी, कि यह चारों ही धाम किसी अन्य राज्य में नहीं बल्कि उत्तराखंड राज्य में ही मौजूद है। इन चारों पवित्र स्थलों को **चार धाम** के नाम से प्रमुख उपाधि प्राप्त है। लोगों का मानना है, कि इन चार धामों की यात्रा करके मनुष्य अपने जीवन की सभी चिंताओं से मुक्त हो जाता है। उत्तराखंड राज्य में विश्व भर में प्रसिद्ध चार धामों के अलावा कुछ अन्य पर्यटन स्थल भी हैं, उत्तराखंड राज्य में *हरिद्वार, देवप्रयाग, यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ,तुंगनाथ, बद्रीनाथ, गौरीकुंड, रिजुगीनारायण, टिहरी, ऋषिकेश, धरासू, उत्तरकाशी* इत्यादि स्वयं में अपनी एक अलग ही पहचान लिए मौजूद है।
उत्तराखंड राज्य में स्थित मुख्य राष्ट्रीय उद्यान: उत्तराखंड राज्य में पवित्र स्थलों के होने के साथ-साथ भारत के बहुत से राष्ट्रीय उद्यान भी इसी राज्य में मौजूद हैं। उत्तराखंड राज्य में स्थित कुछ महत्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्यान जैसे *जिमकार्बेट राष्ट्रीय उद्यान* (रामनगर) *फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान* और *गंगा की देवी राष्ट्रीय उद्यान* (चमोली जिला) स्वयं की सुंदरता के कारण पूरे विश्व भर में प्रसिद्ध है।
उत्तराखंड राज्य देवों की भूमि होने के साथ-साथ प्राकृतिक सुंदरता का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। यहां मैं श्याम सिंह बिष्ट, डोटल गांव, उत्तराखंड की कविता भी संकलित करना चाहता हूं जो सम्पूर्ण उत्तराखंड का दर्शन कराती है:

चलो आवौ तुम्हें अपना पहाड़ घुमाऊं,
कभी नैनीताल, तो कभी रानी खेत, ले जाऊं
इन पहाड़ों की वादियों की सैर कराऊं,
चलो आवौ तुम्हें अपना पहाड़ घुमाऊं
देव भूमि नाम है इसका,
अपने पहाड़ों से तुम्हें परिचित कराऊं ,
कभी गढ़वाल,तो कभी कुमाऊं,ले जाऊं
चलो आओ तुम्हें अपना पहाड़ घुमाऊं
गंगा, यमुना, गंगोत्री , के तुम्हें दर्शन कराऊं,
राजा मालूशाही के गीत, तुम्हें सुनाऊं,
गोलू की भूमि ,
कत्यूरों के जागर के बारे में तुम्हें बताऊं
चलौ आओ तुम्हें अपना पहाड़ घुमाऊं
हरिद्वार ,हिमालय ,तीर्थ स्थल तुम्हें मैं लै जाऊं
चलो आओ तुम्हें अपना पहाड़ घुमाऊं
टिहरी बाँध , चिपको आंदोलन ,की कथा तुम्हें सुनाऊं,
त्यौहार हरेला का ,और नंदा देवी मेले के बारे में बताऊँ
चलो आओ तुम्हें अपना पहाड़ घुमाऊं
मडुवे की रोटी , बाल मिठाई तुम्हें अल्मोड़े की खिलाऊं,
ढोल, दमुआ, बीन बाजा तुम्हें बजाना सिखाऊं
चलो आओ तुम्हें अपना पहाड़ घुमाऊं
गोपाल बाबू गोस्वामी,
पहाड़ी ,गढ़वाली,भाषा का तुम्हें ज्ञान कराऊं,
चीड़, देवदार ,बुरांसकै फायदे तुम्हें बताऊँ
आओ तुम्हें अपना पहाड़ अपना गांव घुमाऊं

गणेश डोभाल
उप मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी

मानक देवनागरी वर्णमाला

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
अनुस्वार	ं (अं)	विसर्ग	ः (अः)								
व्यंजन											
स्पर्शीय/ वर्गीय	क	ख	ग	घ	ङ		(क वर्ग)				
	च	छ	ज	झ	ञ		(च वर्ग)				
	ट	ठ	ड	ढ	ण	(ड़ ढ़)	(ट वर्ग)				
	त	थ	द	ध	न		(त वर्ग)				
	प	फ	ब	भ	म		(प वर्ग)				
अंतस्थ:	य	र	ल	व							
ऊष्म	श	ष	स	ह							
संयुक्त	क्ष (क्+ष)	त्र (त्+र)	ज्ञ (ज्+ञ)	श्र (श्+र)							
आगत स्वर	ऑ										
आगत व्यंजन	अ़	क़	ख़	ग़	ज़	फ़	(मूल 5 (अ़ को छोड़कर), कुल 6)				
नुक्ता	ड़	ढ़									

@ know more in detail ...

सतर्कता जागरूकता– स्वतंत्र भारत @ 75: अखंडता के साथ आत्म निर्भरता'

एक नागरिक के रूप में, सत्यनिष्ठा से आत्म निर्भरता का पालन करना हमारा नैतिक दायित्व है, और हमारे सिस्टम के भीतर कदाचारों को उजागर और उसकी सूचना देकर हमारे राष्ट्र की अखंडता को बनाए रखना हमारी जिम्मेदारी है। सतर्क और जागरूक रहना ये किसी भी इंसान या समाज के विकास के लिए बहुत ही सहायक होता है।अखंडता के साथ आत्म निर्भरता तभी संभव है जब देश का हर नागरिक सतर्क के साथ जागरूक हो कर आत्मनिर्भर बनें। सतर्कता किसी भी देश के विकास की एक पहली सीढ़ी होती है क्योंकि यदि हम सतर्क रहेंगे तो हम आने वाली सभी समस्याओं से बच सकेंगे और यदि हमारे जीवन में समस्याएं कम होंगी या हमारे देश में समस्याएं कम होंगी तो हमारा विकास होगा और देश का भी विकास तेजी से होगा। सतर्कता के प्रति जागरूकता जितनी बढ़ेगी उतने ही स्तर पर हम भ्रष्टाचार को दूर करने में सफल हो सकेंगे। सतर्कता और जागरूकता विकासशील देशों की बढ़ती आवश्यकता है जो सामाजिक उन्नयन और परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

सतर्कता)Vigilance) का अर्थ है सावधानी। सतर्कता विशेष रूप से कर्मियों और सामान्य रूप से संस्थानों की – दक्षता एवं प्रभावशीलता की प्राप्ति के लिये स्वच्छ तथा त्वरित प्रशासनिक कार्रवाई सुनिश्चित करना, क्योंकि सतर्कता का अभाव अपव्यय, हानि और आर्थिक पतन का कारण बनता है। वर्तमान में सतर्कता को अपने जीवन में ढालना अनिवार्य है।

जागरूकता पर दें ध्यान ,सतर्कता से हर काम होते आसान सतर्क और जागरूक रहना ये किसी भी इंसान या– समाज के विकास के लिए बहुत ही सहायक होता है। जो समाज या राष्ट्र जागरूक और सतर्क नहीं होता उसे बड़ी ही तकलीफें उठानी पड़ती हैं जिसका उदाहरण हमारा अपना देश हैं जो असतर्कता में सैकड़ों सालों तक गुलाम रहा और आज़ादी के लिए एक बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी।

सतर्कता और जागरूकता ही स्वतंत्रता की कीमत है आज –भारतआज़ादी , का अमृत महोत्सव मना रहा है,स्वतंत्रता से लेकर आज तक की भारत की विकास यात्रा शानदार रही हैं। चाहे क्षेत्र कोई भी हो ,कृषि से लेकर अंतरिक्ष तक, संचार क्रांति से लेकर ट्रेन बनाने तक , हर काम में भारत धीरेधीरे आत्मनिर्भर हो रहा है।- नित नए नए आविष्कारों- और तकनीकी विकास को जन्म दे, भारत ने विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई हैं। एक ओर जहां भारत ने आत्मनिर्भर बनने के लिए अभूतपूर्व विकास का मार्ग अपनाया। वहीं दूसरी ओर भारत अपने पूर्वजों के द्वारा दिए गए आदर्श मूल्यों, संस्कारों, समृद्ध परंपराओं को भी साथ लेकर चला है। भारत को अगर एक महाशक्ति के रूप में उभरना है तो उसे हर क्षेत्र में सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भर होना ही होगा। इसी उद्देश्य से केन्द्रीय सतर्कता आयोग का गठन किया गया। केन्द्रीय सतर्कता आयोग सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से गठित एक सर्वोच्च संगठन है। यह आयोग समय निदेशों के माध्यम से आवश्यक दिशानिर्देश जारी करता / समय पर परिपत्रों- है, ताकि भारत सरकार के सभी विभागों में सतर्कता संबंधी कामकाज कारगर (स्वायत्त निकायों सहित) संगठनों / ढंग से हो सके।

सतर्कता आयोग के निर्देशों के अनुसार इस वर्ष **"स्वतंत्र भारत@75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता"** विषय को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के लिए चुना गया।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत का निर्माण – सतर्कता और जागरूकता विकासशील देशों की बढ़ती आवश्यकता है जो सामाजिक उन्नयन और परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। भ्रष्टाचार के बढ़ते खतरे और उसके परिणामों की चिंता को विचार करने के उद्देश्य से सप्ताह मनाया जाता है।भ्रष्टाचार मुक्त भारत का निर्माण करना हम सब का कर्तव्य है जिसके परिणाम स्वरूप हमारे देश में पारदर्शी समाज का निर्माण होगा। भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने में हम सब का योगदान जरूरी है। सरकार ने जागरुकताओं को फैलाने में पूरी ताक़त झोक दी है चाहे वह शौचालय के प्रयोग की जागरूकता हो या जीविकोपार्जन के लिए जरूरी जागरूकता सभी को ध्यान में रखते हुए जरूरी प्रयास किये जा रहे हैं। सतर्कता एक आदत और जीवन जीने का तरीका है जो देश के हित के लिए हम में से प्रत्येक को कार्य करने के और बेहतर तरीके अपनाने के लिए प्रेरित और सक्षम करता है। आज जब हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तोदेश में मजबूत सिद्धांतोंसत्यनिष्ठा , और विश्वास पर आधारित संस्कृति के निर्माण में हमें अपना योगदान देना है। समाज के सभी वर्गों खासकर युवाओं का ध्यान एक ईमानदार, गैर भेदभावपूर्ण और भ्रष्टाचार मुक्त समाज के-निर्माण करने के तरफ आकर्षित होगा और समाज को वैचारिक रूप से स्वच्छ बनाने में मदद मिलेगी।

भारत में अनेक तरह की समस्याएं हैं जैसे भ्रष्टाचार, प्रदूषण, बढ़ती जनसंख्या, आतंकवाद इन सभी समस्याओं से भारत काफी समय से लड़ रहा है लेकिन फिर भी भारत को पूरी तरह से सफलता नहीं मिल पा रही है इसलिए अगर आप भारत देश के नागरिक हैं और अपने देश को समृद्ध भारत बनाना चाहते हैं तो आपको भी इसकी जिम्मेदारी लेनी होगी आपको यह ध्यान रखना होगा और सतर्क रहना होगा कि आपके आसपास लोगों की गतिविधियां किस तरह की है यदि आपको किसी पर संदेह होता है तो आप उसकी शिकायत जरूर दर्ज करें ताकि होने वाले अपराध को रोका जा सके, यदि आप खुद में बदलाव ले आएंगे तो देश में भी बदलाव जरूर आएगा। भ्रष्टाचार समाज और देश के विकास में एक बड़ी बाधा रही है और मेरा यह भी मानना है कि आज इस बुराई को अपने समाज से दूर करने के प्रयास हमें मिल जुल कर करने की जरूरत है, प्रत्येक नागरिक को सतर्क और प्रतिबद्ध होना चाहिए। वह दिन दूर नहीं जब आगे आने वाला भारत सत्यनिष्ठा से आत्म निर्भरता की ओर आगे बढ़ेगा।

राजेश सैनी
उप मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी एवं पूर्व मुख्य सतर्कता अधिकारी

आओ पेड़–पौधे लगाकर प्रदूषण को दूर भगाएं

प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना ही प्रदूषण है। ऐसी स्थिति में ना तो हमें शुद्ध वायु मिलती है न शुद्ध जल, न शुद्ध खाद्य पदार्थ और ना ही शांत वातावरण। प्रदूषण एक ऐसा अभिशाप है। जो विज्ञान की कोख से जन्मा है, जिसे सहने के लिए समस्त मानव जाति मजबूर है। आज वायु प्रदूषण सबसे बड़ा संकट बनकर उभर रहा है। यह प्रदूषण के कण हवा के साथ मनुष्य के फेफड़े में चले जाते हैं और असाध्य रोगों को जन्म देते हैं यह समस्या वहां ज्यादा होती है जहां घनी आबादी होती है वृक्षों का अभाव होता है। कोविड-19 महामारी ने हमें साफ हवा की कीमत समझा दी है। पर्यावरण संरक्षण के निमित्त हम सब का सहयोग अनिवार्य हो गया है। आज मानव को हरित मानसिकता विकसित करने की आवश्यकता है। दैनिक कार्यों में प्लास्टिक का कम से कम प्रयोग, कम बिजली, कम पानी, कम गैस का प्रयोग कर, साइकिल एवं अधिक दूरी तय करने के लिए सार्वजनिक वाहनों का उपयोग कर कोई भी व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण में अपनी भूमिका निभा सकता है। प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए सरकार अपने स्तर पर काम कर रही है लेकिन जनमानस को भी अपने स्तर पर छोटे-छोटे प्रयास करने चाहिए ताकि पर्यावरण को शुद्ध रखा जा सके। प्रत्येक व्यक्ति अपने आसपास गमलों में छोटे-छोटे पौधे लगाएं जो प्रदूषण को रोकने में सहायक होते हैं। चलिए आज कुछ ऐसे ही पौधों के बारे में जानते हैं जो कई हानिकारक गैसों को अवशोषित कर के कई घंटों तक हमारे लिये ऑक्सीजन का उत्पादन करते हैं और हवा को शुद्ध करने में बहुत मददगार होते हैं।

स्नेक पौधा

स्नेक पौधा रात को भी ऑक्सीजन उत्पन्न करता है, जो बाकी पौधों के मुकाबले अधिक होता है इस लिये इसे वायु साफ़ करने के लिये आदर्श माना जाता है। यह पौधा जाइलीन, फॉर्मल्डेहाइड, टोल्यूनि और नाइट्रोजन ऑक्साइड को हवा से शुद्ध करता है। NASA ने अपने अंतरिक्ष यात्रियों के लिये इन पौधों का उपयोग किया ताकि उन्हें अन्तरिक्ष में ताज़ा हवा प्राप्त हो सके। यह हवा से प्रदूषण की मात्रा को कम करता है और प्रदूषण के कारण होने वाले किसी भी प्रकार के जलन, एलर्जी, जैसी समस्याओं को रोकता है।

ऐरेका पाम

इस पौधे को अपने वायु शुद्ध करने के गुण के लिये बहुत अच्छी तरह जाना जाता है यह हवा में से अशुद्धियों को दूर करता है और आपको स्वच्छ और ताजी हवा प्रदान करता है। यह हवा से एसीटोन, टोल्यूनि जैसे विषैले तत्वों को निकालने के लिये जाना जाता है, इस लिये यदि ताजी हवा का आनंद लेना है तो इसे अपने घरों में अवश्य लगायें।

सिंगोनियम

इसे लोग ताजी हवा के साथ-साथ अच्छी किस्मत के लिये भी घरों में रखना पसंद करते हैं। यह हर प्रकार की सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करते हैं और आपको सभी प्रकार के तनाव और चिंता को दूर रखता है। यह सभी प्रकार के वायु अशुद्धियों को दूर करता है और आपको शुद्ध हवा प्रदान करता है। वे हवा से टोल्यूनि, बेंजीन आदि जैसी जहरीले अशुद्धियों को हटाता है।

मनी प्लांट

यह एक ऐसा पौधा है इसे आप आसानी से लोगों के घरों में देख सकते हैं। ये सदाबहार पौधा है और इसके पत्ते दिल के आकार के होते हैं, जो देखने में बेहद आकर्षक होते हैं। इन्हें हवा से विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों को भी दूर करने के लिये जाना जाता है। इनमें अधिक ऑक्सीजन उत्पादन की भी अद्भुत क्षमता होती है। ऐसा पाया गया है की ये तनाव और अनिद्रा को भी दूर करने में सहायक होता है।

स्पाइडर प्लांट

यह उन विशेष पौधों में से एक है जो हवा से कार्बन की अशुद्धियों को बखूबी दूर करता है और आपके घर में एक प्राकृतिक वायु शोधक के रूप में काम करता है। NASA ने 80 के दशक में ही इस पौधे के हवा शुद्ध करने के गुणों को साबित कर दिया था। इन्हें बेहद आसानी से उगाया जा सकता है और इनकी देखभाल में अधिक झंझट भी नहीं रहता।

एलोवेरा

यह एक ऐसा गुणकारी पौधा है जिसके अपने कई लाभ है। इसके कई गुण है जैसे की इसके भीतर एक प्रकार का जेल होता है जिससे त्वचा संबंधित सभी प्रकार के विकारों को सही किया जा सकता है। इन सब के अतिरिक्त इस पौधे का इस्तेमाल हवा को शुद्ध करने के लिये भी होता है। एलोवेरा हवा से कार्बनिक यौगिकों को निकालता है और उसमें मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करता है और प्रचुर मात्रा में ऑक्सीजन प्रदान करता है

ऐसे और भी कई पौधे है जो वातावरण को शुद्ध बनाये रखने में सहायक होते हैं। पौधे सबसे अच्छे हवा के शोधक होते हैं बस जरूरत होती है थोड़े से पानी और देखभाल की। वास्तु और फेंगशुई के अनुसार भी पौधे बेहद शुभ होते है और ये इलेक्ट्रॉनिक एयर प्यूरीफायर के बदले बेहद सस्ते भी होते हैं। हरा रंग हमारे मूड को बदल देता है और हमें शांति प्रदान करती है। तो आओ पेड़–पौधे लगाकर प्रदूषण को दूर भगानें में सहयोग करें।

जल संरक्षण

जल ही जीवन है। यह पंक्ति कोई अतिशयोक्ति नहीं है। जल मानवता के सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों में से एक है। हमारे ग्रह का लगभग फीसदी हिस्सा पानी से घिरा हुआ है और इसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना 70 भी नहीं की जा सकती है। हमें अपनी दैनिक जरूरतों और गतिविधियों के लिए पानी की आवश्यकता होती है परन्तु इन कार्यों में हम काफी पानी व्यर्थ कर देते हैं। पूरे विश्व में जल का स्तर घटता जा रहा है नदियां सूखती जा , भूमिगत ,रही हैं। लोगों को कई मील दूर जाकर अपने लिए पानी का इंतजाम करना पड़ता है। नदियों में पानी की कमी कृषि उत्पादन में कमी आदि ये कुछ ऐसे दुष्परिणाम हैं कि यदि ,पौधों की घटती संख्या-पेड़ ,जल के स्तर में कमी आप भविष्य के विषय में सोचे तो कांप जायें। यही सब देखते हुए प्रकृति की इस धरोहर को बनाने के लिए धरती पर जीवन कायम करने के लिए हमें जल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

यद्यपि कुछ संस्थायें जल सरंक्षण पर कार्य कर रही हैं परन्तु मात्र इतना ही प्रयास बहुत नहीं है। यह विश्वव्यापी समस्या है इसलिए पूरे विश्व के लोगों को मिलजुल कर इसमें सहयोग करना होगा तभी इस अमूल्य सम्पदा को बचाया जा सकता है। इसके लिए शुरूआत हमें अपने घर से करनी होगी। फव्वारे या सीधे नल के नीचे बैठकर नहाने की बजाय बाल्टी और मग का प्रयोग करें। घर के बगीचे में पानी देते समय पाइप की बजाय फव्वारें का प्रयोग करें। ज्यादा से ज्यादा पेड़ पौधे लगायें जिससे वर्षा की कमी न हो। हो सके तो पौधों में बरसाती मौसम में ही रोपें जिससे उन्हें प्राकृतिक रूप से पानी मिल जाए। घर में ऐसे पौधों को लगाने की कोशिश करनी चाहिए जो कम पानी में भी रह सकते हैं। सरकार को कुछ ऐसी नीतियां बनानी होगी कि औद्योगिक इकाईयों से निकलने वाला गंदा पानी नदियों में न मिले और इसके निस्तारण की कुछ अच्छी व्यवस्था हो जिससे खतरनाक रसायन पीने योग्य पानी में मिलकर उसे दूषित न कर पायें। धरती पर बढ़ती जनसंख्या के दबाव पर भी ठोस कदम उठाये जाने चाहिए। बरसाती जल इकट्ठा करने एवं प्रयोग में लाने के लिए छोटी इकाईयों को बढ़ावा देना चाहिए जिससे बरसाती जल व्यर्थ न जाए। जल संरक्षण के लिए रेनवाटर हार्वेस्टिंग और फेरोसीमेंट टैंक तकनीक का सहारा लेना चाहिए। इन प्रणालियों- के इस्तेमाल से हम बारिश के पानी को इकट्ठा कर आरटीफीशियल रीचार्ज सिस्टम में मोड़ सकते हैं और दूसरे कामों में भी पानी का इस्तेमाल कर सकते हैं।

वन्दना वर्मा

कविताएं

किसी ने सच ही कहा है, कविता लिखना आसान काम नहीं है। कविता में भावना और भावनाओं की अभिव्यक्ति होनी जरूरी है। हर व्यक्ति कवि नहीं बन सकता। कविता कॉलम में संकलित सभी कविताएं लेखकों द्वारा स्वरचित नहीं है लेकिन कहीं ना कहीं उनके अंतर मन को छू अवश्य गई है। प्रस्तुत है, कार्मिकों द्वारा संकलित कुछ कविताएं

हिंदी वर्णमाला का क्रम से कवितामय में प्रयोग

अचानक
आ कर मुझसे,
इठलाता हुआ पंछी बोला
ईश्वर ने मानव को तो-
उत्तम ज्ञान-दान से तौला
ऊपर हो तुम सब जीवों में-
ऋषि तुल्य अनमोल,
एक अकेली जात अनोखी
ऐसी क्या मजबूरी तुमको-
तरस गयी होंठों पे शोख़ी!
और सताकर कमज़ोरों को,
अंग तुम्हारा खिल जाता है;
अहः तुम्हें मिल जाता है
कहो मैंने- कि कहो,
आज सम्पूर्ण गर्व से कि- हर अभाव में भी,
घ र तुम्हारा बड़े मजे से,
च ल रहा है।
छोटी सी- टहनी के सिरे की जगह में
बिना किसी झगड़े के, ना ही किसी टकराव के पूरा
कुनबा पल रहा है
ठौर यहीं है उसका
डाली-डाली,पत्ते मे
ढलता सूरज देता तरावट
मानवता को घट-घट में
थकावट सारी पूरे दिवस की
तारों की छईंया से
फुर से हर लेता है।
ना दान-नियति से अनजान बनो
अरे! प्रगतिशील श्रीमानो
फ़रेब के पुतले बन बैठे हो! हे मेरे समर्थ वान।
भला याद कहाँ है तुम्हे,
असल मनुष्यता का नजराना ?
यह जो थी, प्रभु की
अनुपम रचना
लालच-लोभ के
वशिभूत होकर,
शर्म-धर्म सब तज धारा।
षड्यंत्रों के खेतों में,
सदा पाप-बीजों को बोकर।
हो कर स्वयं से दूर-
क्षण भंगुर सुख में अटक चुके हो
त्रास को आमंत्रित करके
ज्ञान-पथ से भटक चुके हो।
इठलाता हुआ पंछी बोला
ईश्वर ने मानव को तो
उत्तम ज्ञान-दान से तौला।
ऊपर हो तुम सब जीवों में-
ऋषितुल्य अनमोल,

एक अकेली जात अनोखी
ऐ सी क्या मजबूरी तुमको-
छोड़ रहे होंठों की शोख़ी!
सता-सता कमज़ोरों को,
अंग तुम्हारा क्यों खिल जाता,
अहम् की जोत जगाने में।
कहें ऋषि प्रभातम
क ख ग आज सम्पूर्ण,
गर्व करो कि हर अभाव में भी,
घर तुम्हारा बड़े मजे से चलता है
छोटी सी टहनी के सिरे की
जगह में,
बिना किसीझगड़े के,*
ना ही किसी टकराव के,
पूरा कुनबा पल जाता है।
ठौर यहीं है उसमें,
डाली-डाली, पत्ते-पत्ते में
ढलता सूरज-
तरावट देता
उतारे थकावट सारे दिन की
तारों की अठखेलियों से
धन-धान्य की लिखावट लेता है

ना दान-नियति से अनजान बनो,
अरे प्रगतिशील मानव,
फ़रेब के पुतले
बन बैठे हो
समर्थवान इंसानों
भ ला याद कहाँ तुम्हे,
मनुष्यता का मर्म ?
कयोंकि यह थी,
प्रभु की इच्छा कि
इन्सान बना अनुपम
लालच-लोभ के
वशिभूत होकर,
शर्म-धर्म सब तजकर
षड्यंत्रों के खेतों में,
सदा पाप-बीजों को बोकर
हो कर स्वयं से दूर,
क्षणभंगुर सुख में अटक चुके हो
त्रास को आमंत्रित करके,
ज्ञान-पथ से भटक चुके हो

****

सजल है कितना सवेरा

सजल है कितना सवेरा
गहन तम में जो कथा इसकी न भूला
अश्रु उस नभ के, चढ़ा शिर फूल फूला
झूम-झुक-झुक कह रहा हर श्वास तेरा

राख से अंगार तारे झर चले हैं
धूप बंदी रंग के निर्झर खुले हैं
खोलता है पंख रूपों में अंधेरा

कल्पना निज देखकर साकार होते
और उसमें प्राण का संचार होते
सो गया रख तूलिका दीपक चितेरा

अलस पलकों से पता अपना मिटाकर
मृदुल तिनकों में व्यथा अपनी छिपाकर
नयन छोड़े स्वप्न ने खग ने बसेरा

ले उषा ने किरण अक्षत हास रोली
रात अंकों से पराजय राख धो ली
राग ने फिर साँस का संसार घेरा

गणेश साह

छोड़ दीजिये

एक दो बार समझाने से कोई नही समझ रहा है
तो सामने वाले को समझाना छोड़ दीजिए
बच्चे बड़े होने पर वो खुद के निर्णय लेने लगे
तो उनके पीछे लगना छोड़ दीजिए
गिने चुने लोगों से अपने विचार मिलते है,
एक दो से नहीं जुड़े तो उन्हें छोड़ दीजिए
एक उम्र के बाद कोई आपको ना पूछे या
कोई पीठ पीछे आपके बारे में गलत कह रहा है
तो दिल पे लेना छोड़ दीजिए
अपने हाथ कुछ नहीं, ये अनुभव आने पर
भविष्य की चिंता करना छोड़ दीजिए।
इच्छा और क्षमता में फर्क पड़ रहा है,
तो खुद से अपेक्षा करना छोड़ दीजिये।
हर किसी का जीवन अलग, कद, रंग सब अलग है,
इसलिए तुलना करना छोड़ दीजिये।
मैं दोस्त के रूप में अच्छा लगूँ तो ठीक,
वरना मुझे भी छोड़ दीजिये।
बढ़ती उम्र में जीवन का आनन्द लीजिये,
रोज जमा खर्च की चिन्ता करना छोड़ दीजिये।
ये सन्देश/कविता अच्छी लगे तो ठीक ना लगे
तो हल्के में लेकर छोड़ दीजिये।

मेहरबान सिंह चौहान

प्रथम परमवीर चक्र मेजर सोमनाथ शर्मा

सहस्त्र शत्रुओं से शौर्य से लड़कर,
युद्ध भूमि में छाए वो ।
देकर अपने प्राणों की आहुति,
प्रथम परमवीर कहलाए वो ॥

जननी भूमि प्रथम माता है,
पुत्र का है रक्षा का दायित्व ।
मातृभूमि की रक्षा करने,
को ही है उनका अस्तित्व ॥

इसे मानकर ही ब्रह्मवाक्य,
सेना में थे आए वो,
देकर अपने प्राणों की आहुति,
प्रथम परमवीर कहलाए वो ॥

करनी थी रक्षा राष्ट्र मुकुट की,
और देश के स्वाभिमान की ।
जन-जीवन की शहर-गाँव की ।
और सेना की आन-बान-शान की ॥

तीन ओर से घेर लिए जब,
फिर भी न घबराए वो ॥
अंतिम श्वास और अंतिम गोली तक,
दुश्मन से लड़ते आए वो ।
देकर अपने प्राणों की आहुति,
प्रथम परमवीर कहलाए वो ॥

सहस्त्र शत्रुओं से शौर्य से लड़कर,
युद्ध भूमि में छाए वो ।
देकर अपने प्राणों की आहुति,
प्रथम परमवीर कहलाए वो ॥
प्रथम परमवीर कहलाए वो ॥

अद्विता कश्यप
सुपुत्री श्री संजय कश्यप
कक्षा –5,एमिटी इंटरनेशनल स्कूल,नोएडा

सबसे बड़ा दहेज

जब लड़का शादी करके अपने घर पहुँचा तो
सबने पूछा दहेज में क्या-क्या मिला है।
कुछ देर तो लड़का चुप रहा फिर अपनी
दुल्हन की रोने की आहट हुई तो उससे
रहा नहीं गया, लड़का बोला आज में दुनिया
का अमीर आदमी बन गया हूँ।
एक बाप ने अपनी जान से भी प्यारी बेटी दे दी है,
एक भाई ने अपनी हम जोली दे दी है।
एक बहन ने अपनी परछाई दे दी है,
और तो और एक माँ जो दुनिया को सब कुछ दे सकती है
पर अपनी संतान नहीं देता है
उस माँ ने अपने आँचल में खेली गुड़िया दे दी
और क्या चाहिए मुझे ऐसी सोच रखने वाले
लड़कों को मेरा दिल से सलाम है।
आज के युवाओं में यह सोच होनी जरूरी है................................

राकेश शर्मा, सहायक

धरती की पुकार

मुझे प्लास्टिक मुक्त करो, वरना एक दिन
ऐसा भी आएगा बंजर मरूभूमि पर, कोई ज्यादा न टिक पाएगा
प्रदूषण नित-प्रतिदिन बस, विकराल होता जाएगा
कैन्सर जैसे रोगों पर, कोई sकैसे लगाम लगाएगा
धीरे-धीरे मुझ धरा पर, सर्वस्व समाप्त हो जाएगा।

सुशील कुमार

कोशिश कर , हल निकलेगा

कोशिश कर , हल निकलेगा
आज नहीं तो, कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा सध,
मरुस्थल से भी जल निकलेगा।
मेहनत कर , पौधों को पानी दे,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिंदा रख, दिल में उम्मीदों को,
गरल के
"दर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की,
जो हैं आज थमा थमा सा, चल निकलेगा।

विकास किशोर सक्सेना

मेकअप

लोग कहते है कि ।।
औरतें बहुत मेकअप करती हैं।।
सच ही तो है ।।
औरतें सिर्फ चेहरे पर ही नहीं।।
बल्कि घर ,परिवार ,बच्चे, पति ,समाज
सभी पर मेकअप ही तो करती रहती हैं।।
जब एक बेटी पैदा होती है,,
तब अपने सुंदर मुस्कान से घर में बेटी की पैदाइश के मातम को छुपा देती है।
उस वक़्त लोगों के चेहरे पर मेकअप करती है।।
और लोग बेटी – बेटा भूल कर मुस्कराने लगते है।।
वही बेटी जब थोड़ी बड़ी होती हैं तब भाई की गलतियों को अपने सर ले लेती है,
और भाई की कमियों पर हमेशा मेकअप करती रहती हैं।।
दोस्तों की गलतियों पर मेकअप ।।
टीचर्स की गलतियों पर मेकअप।।
बेहतर शिक्षा न् मिलने पर माता पिता पर मेकअप।। –
शादी होने पर ससुराल वालों के अत्याचार पर मेकअप।।
मायके की कमियों पर मेकअप।।
पति की बेवफाई पर मेकअप।।
रिश्तों की बदनीयती पर मेकअप।।
बच्चों की कमियों पर मेकअप ।।
और फिर उनकी गलतियों पर मेकअप ।।
बुढ़ापे में दामाद के द्वारा किया गए अनादर का मेकअप
तो बहु की बेरुखी पर मेकअप।।
पोता – पोती की शरारतों पर मेकअप ।।
और आखिर में।।
बुढ़ापे में परिवार में अस्तित्वहीन होने पर मेकअप।।
एक औरत जन्म से लेकर मृत्यु तक मेकअप ही तो करती रहती है।।

सिर्फ एक ही आस में कि उसे
""तारीफ के दो बोल मिल जाये""
फिर भी हमेशा उसी को जलील होना पड़ता है।।

पता है?

औरतें जी कर भी जी नहीं पातीं,
और चैन से मर भी नहीं पातीं
अटका रह जाता उनका मन,
अपने बच्चों में, परिवार में,
तीज में, त्यौहारों में, माँ के आँचल में,
मायके के आँगन में, घर की तुलसी में,
बालकनी की कुर्सी में, जब तक जीती है
भागा दौड़ी में ही निकल जाता है वक़्त,
और जब मरती हैं तो, छोड़ जाती है अपना अंश,
अपना वंश, अपनी यादें, अपनी निशानियाँ,
ढेर सारी कहानियाँ, कुछ बातें, कुछ वादे,
छोड़ जाती हैं, घर के आँगन में,
तुलसी के चौरे में, बच्चों के आंखों में,
बिस्तर के सिरहाने में, घर के कोने-कोने में,
थोड़ा-थोड़ा ख़ुद को.....!!

सभी महिलाओं को समर्पित

अकेलापन बनाम एकान्त

अकेलापन सज़ा है! और एकांत वरदान!
ये दो समानार्थी दिखने वाले शब्दों के अर्थ में आकाश पाताल का अंतर है।
अकेलेपन में छटपटाहट है, एकांत में आराम!
अकेलेपन में घबराहट है, एकांत में शांति।
जबतक हमारी नज़र बाहर की ओर है तब तक हम अकेलापन महसूस करते हैं!
जैसे ही नज़र भीतर की ओर मुड़ी, तो एकांत अनुभव होने लगता है।
ये जीवन वस्तुतः अकेलेपन से एकांत की ओर एक यात्रा है!
जिसमें रास्ता भी हम हैं और मंज़िल भी हम हैं!!
वो हवा वहीं ठहरी है, अभी तक और छूती है रोज
लगभग रोक लेती हुई सी, जब गुजरने लगता हूँ वहाँ से
जहाँ उस दिन गुजरते फोन आ गया था तुम्हारा
और थोड़ी देर के लिए आस पास
चम्पा के फूल खिल आये थे
अपनी साँसों में समेटते हुए
कई सा हरा रंग ओढ़ लिया था धरती ने
और कोंपलें निकल आई थीं डालियों में
जो प्राण को सुहाना कर देता है
लिपे हुए आँगन सा और नये पुआल से सजे घर सा
जो जुगनुओं से पाट देता है आकाश को और दूबों से भोर
बौना करके कलह सारा खुशबू के इस ठहराव और
रंगों के ऐसे रुक जाने के लिए हवा के ऐसे ठिठक जाने और
रचना की खिलखिलाहट के लिए तुम्हें,
मुझे और दुनिया के तमाम लोगों को
प्यार करते रहना चाहिये.........

राजिक

प्रकृति का स्वच्छंद स्वरूप

सुन्दर रूप इस धरा का, आँचल जिसका नीला आकाश
पर्वत जिसका ऊँचा मस्तक, उस पर चाँद सूरज की बिंदियों का ताज
नदियों- झरनों से छलकता यौवन, सतरंगी पुष्प-लताओं ने किया शृंगार
खेत-खलिहानों में लहलाती फसलें, बिखराती मंद-मंद मुस्कान
हां, यही तो है.......... प्रकृति का स्वच्छंद स्वरूप.........

ईशा खनका

आहिस्ता चल ज़िन्दगी

आहिस्ता चल ज़िन्दगी, अभी कई क़र्ज़ चुकाना बाकी है,
कुछ दर्द मिटाना बाकी है, कुछ फ़र्ज़ निभाना बाकी है;
रफ्तार में तेरे चलने से कुछ रूठ गए,
कुछ छूट गए ; रूठों को मनाना बाकी है,
रोतो को हसाना बाकी है ; कुछ हसरतें अभी अधूरी है,
कुछ काम भी और ज़रूरी है ; ख्वाइशें
जो घुट गयी इस दिल में, उनको दफनाना अभी बाकी है ;
कुछ रिश्ते बन के टूट गए, कुछ जुड़ते जुड़ते छूट गए;
उन टूटे-छूटे रिश्तों के ज़ख्मों को मिटाना बाकी है ;
तू आगे चल में आता हु, क्या छोड़ तुजे जी पाऊंगा ?
इन साँसों पर हक है जिनका, उनको समझाना बाकी है ;
आहिस्ता चल जिंदगी, अभी कई क़र्ज़ चुकाना बाकी है।

राजन चौहान

समय

समय का सबसे कहना है, जीवन चलते रहना है,
इसको मत करो बर्बाद करो, सदा काम की बात करो।
समय पे सोना समय पे जागना, समय पे खाना समय पे खेलना,
फिर आज का काम कल पे क्यों टालना,
मनन करो समय का नमन करो।
कल कल नदियां बहती है, हर-पल सबसे कहती है,
जीवन बहता पानी है, रूकना मौत की निशानी है।

मनीष कुमार

पर्यावरण बचाओ

क्यों न सहेज कर रख लें
इस प्रकृति को आने वाले कल के लिए
आने वाले अपनों के लिए।
ये कटते वृक्ष ये सूखती नदियां
ये सिमटते पर्वत एक रोज यूं ही खत्म हो जायेंगे।
आज हम कुछ कर सकते हैं। इस रोती हुई
प्रकृति के आंसू हम पोंछ सकते हैं। एक वक्त बाद
प्रकृति के सारे आंसू सूख जायेंगे।
पर आंसू होंगे हमारी आंखों में जिसे चाहकर भी हम
नहीं
हम नहीं पोंछ पायेंगे, हम पुकारेंगे प्रकृति को
अपनी मदद के लिये पर मौत की खामोशी ओढ़े
वो बेजान पड़ी बस यूं ही देखती रहेगी।

मनोज कुमार

प्लास्टिक को कहे ना

अब तो आ रहा है प्लास्टिक यूज़ करने में मजा,
कहीं बन न जाए ये जिंदगी भर की सजा।
बन बैठा है ये पृथ्वी का राजा,पृथ्वी का घुट रहा है ये
गला।।
खाने में, प्लास्टिक पानी में प्लास्टिक,हर वस्तु का नया
रूप हो गया है प्लास्टिक।
बीमारियों की नई फैक्ट्री है प्लास्टिक,मौत का सुंदर
समान है प्लास्टिक।।
अब तो जागो करो बहिष्कार,करो पर्यावरण को
प्लास्टिक मुक्त।
नहीं तो प्लास्टिक से होगा जीना दुश्वार,अब करना होगा
इसका संहार।।

मोबाइल

मोबाइल का आविष्कार दुनिया का सबसे बड़ा चमत्कार।
जब से हाथ लगा इंसान के इंसान हुआ बेकार।
इंसान हो गया बेकार मोबाइल का हो रहा विकास।
हर रोज एक नया वर्जन पाने को तरस रहे युवाओं हाथ।
तरस रहे युवाओं के हाथ, रोजगार पाने को सो अच्छा है यह खिलौना,
बेरोजगारी छिपाने को। बेरोजगारी छिपाने में सहायक है यह यंत्र।
ढेरों इसमें यंत्र, जो बोलों वो हाजिर। इसकी स्क्रीन में झुका मिले छोटे से
बड़ा सिर।
ज्यादा मजा लेने से मिल रही सज़ा।।

विजय सिंह

लोरी

(25 सितंबर 2016 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर दिए गए 21वीं सदी के भारत के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 8 सूत्री दृष्टिकोण पर आधारित बुंदेलखंडी कविता)भाषा/बोली : बुन्देलखंडी (क्षेत्र : झाँसी, ग्वालियर, मुरैना, जालौन, सागर, चित्रकूट, ललितपुर, पन्ना दमोह आदि)

सो जा सो जा बारे वीर
वीरन कौ खिलाये जाऊं जमुना के तीर ....

1. वीर बुंदेला वीर शिवाजी
महाराणा से लल्ला हो
तुम भगतसिंह सावरकर से
भारत के भल्ला हो
सो जा सो जा बारे वीर
वीरन कौ खिलाये जाऊं जमुना के तीर ....

} भारत के वीर योद्धा और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

2. गाँव देस कौ शिक्षा देनै
पानी कौ बचानै
सूरज की किरनन सै लल्ला
सबरो काम चलानै
सो जा सो जा बारे वीर
वीरन कौ खिलाये जाऊं जमुना के तीर ....

} शिक्षा, पर्यावरण सुरक्षा , सौर उर्जा का प्रयोग

3. सब भाषन को इजज्त देनै
नदियअन कौ बचानै
औरत जात की रक्षा करनै
तभई मरद कहा नै
सो जा सो जा बारे वीर
वीरन कौ खिलाये जाऊं जमुना के तीर.....

} समता , समानता , नारी सम्मान और रक्षा

4. तुमै कसम जौ भारत माँ की
पूरौ करज चुका नै
प्रान निछावर कर देनै
और नै कउ नई सकुचा नै
सो जा सो जा बारे वीर
वीरन कौ खिलाये जाऊं जमुना के तीर ......

देश की रक्षा का भाव

5. साफ़ सफाई कौ ध्यान रखनै
गन्दगी कौ हटानै
न्याय धरम कौ पालन करनै
छुआछूत मिटानै-
सो जा सो जा बारे वीर
वीरन कौ खिलाये जाऊं जमुना के तीर ......

स्वछता अभियान , न्याय और अस्प्रश्यता

6. भ्रष्टाचार कौ भाव नई देनै
शिष्टाचार बढ़ानै
खुद के पांव पे खड़े होकै
बेरोजगारी भागनै
सो जा सो जा बारे वीर
वीरन कौ खिलाये जाऊं जमुना के तीर ......

भ्रष्टाचार मुक्त और आत्म निर्भर भारत

पवन त्रिपाठी, पुस्तकालयाध्यक्ष
भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण केंद्र
दिव्यांग सशक्तिकरण विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय

रणभेरी से नहीं होता है युद्ध का आगाज अब
और न हि सूर्यास्त पर होती है युद्ध विराम की घोषणा,
अनवरत जारी है युद्ध की विभीषिका
शत्रु अद्रश्य है और शत्रु की प्रतिपल चाल बदल रही है।।
युद्ध का स्थल और स्वरूप दोनों बदल रहा है
इसके आदि और अंत का कोई थाह नहीं,
और न ही इसके कारण का पता चल रहा है
युद्ध अब भौतिक नहीं अपितु जैविक होता जा रहा है।।
युद्ध में वीरता का अब नहीं रहा कोई विशेष महत्व
हाथी, घोड़े, बरछी, भाला का भी नहीं रहा अब कोई सत्व,
तोप, गोले, टैंक, मिसाइलें सब धूल फाँकने लगीं
जब कोरोना वायरस की लहरें मौत का तांडव करने लगीं।।
शत्रु से लड़ने के हथियार अब पूरी तरह से बदल चुके हैं
क्योंकि अब युद्ध के खेमे में विरोधी दल के सैनिक नहीं हैं,
अपितु एक बहुरूपिया अदृश्य घातक वायरस है
जो प्रतिपल अपने वार को और धारदार बना रहा है।।
इससे लड़ने के प्राथमिक हथियार बहुत ही मामूली से हैं
बड़े-बड़े हथियारों की भूमिका अब साबुन और सैनेटाइजर्स निभा रहे हैं,
और बुलेट फ्रूफ जैकेट की जगह मास्क और फेस शील्ड ने ले रखी है
और अंतिम रक्षा कवच के रूप में वैक्सीन अपनी भूमिका निभा रही है।।

युद्ध की नीति-नियम एवं अवधारणा सब बदल रही है
शत्रु के घायल होने पर उसे पानी पिलाने का चलन,
अथवा उसके द्वारा शस्त्र डाले देने पर
उस पर वार न करने की रीति हमारे पारम्परिक युद्ध की शान थी ।।
इस जैविक युद्ध में दया और धर्म का कोई स्थान नहीं है
क्योंकि इस युद्ध में पूरी मानव-जाति ही एक दूसरे की शत्रु है,
वायरस अदृश्यता रूपी छल और कपट से
शत्रु के विनाश को अंतिम लक्ष्य मानता है।।
विनाश के बाद भी शत्रु का इतना खौफ रहता है कि
मृत व्यक्ति को चार कंधों की अंतिम विदाई भी नसीब नहीं हो पाती है,
हमारे पारम्परिक मूल्य खुद को असहाय पाते हैं
और यह वायरस मानव की आर्तनाद को बड़ी कपटता से सुनता रहता है।।

अनिरुद्ध तिवारी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, निस्पर, नई दिल्ली

मेरे रिश्ते

हमारे जन्म ही के साथ, बनते हैं मधुर रिश्ते
हमारा साथ जीवन भर, निभाते हैं प्रिय रिश्ते।
इन्हीं रिश्तों की संगत में, मेरा जीवन भी गुजरा है
कुशलता से इन्हीं सब ने, मेरा जीवन संवारा है।
मिली थी गोद मुझ को भी, मेरा मातृ प्यारी की।
पिता ने हाथ मेरा भी, था बड़े प्रेम से थामा
मेरा बचपन हो या यौवन, रहा मैं संग प्रियजन के
मैं प्रिय था उनका, वो मेरे मीत थे मन से
स्नेह में पूर्ण करता था, अपने भाई-बहन से।
मेरे जीवन में फिर, मोड़ आया एक नया
विवाह के बाद पत्नी में, रिश्ता पाया एक नया
समय के साथ मैंने हर पल,यह सुन्दर रिश्ता निभाया है
हम एक-दूसरे से प्रभावित हो गए हैं, हम एक-दूसरे में समाहित हो गए हैं।
चली है बात रिश्तों की, तो पावन एक रिश्ता है
'सुमन' का 'सुरभि' से रिश्ता, महासागर से गहरा है।
जरूरी नहीं कि प्यार का रिश्ता, हो केवल मनुष्यों से-
बनाया हमने मधुर रिश्ता एक,जीव के भी संग।
हमारे घर छाई रहती थी, उससे एक उमंग!!
जुबां से कुछ ना कह कर भी, वो बहुत कहता है
वो हमको प्रेम करता है, हमारे दिल में रहता है।
अगर रिश्ते नहीं मिलते, मेरा मन रहता है खाली
इन्हीं के साथ है होली, इन्हीं के साथ दीवाली।
मैं रिश्तों को समझता हूँ, मुझे रिश्ते समझते हैं।

स्व. सुमन शर्मा

प्रेरक प्रसंग/कहानियां

शीर्षक: ध्वज की कराह

(मौलिक रचना।)

एक पाठशाला में एक महोदय के कर कमलों से ध्वज को फहराने का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। पूरी पाठशाला को दुल्हन की तरह सजाया गया था। पूरे मैदान में फूलों और रंगों से रंगोलियां बनाई गई थी। रंग-बिरंगे पताके फहरा रहे थे। दीप झिलमिला रहे थे। वीर शहीदों पर भाषण दिए जाने वाले थे। देशभक्ति के गीत गाए जाने वाले थे। वातावरण में जैसे देशभक्ति की एक लहर फैल गई थी।

आखिर, ध्वज को फहराने का समय आ ही गया। खद्दर के श्वेत वस्त्रों में सज्ज और अपने वाक् चातुर्य से जनता को प्रभावित करने वाले महोदय पधार चुके थे। ध्वज को सलामी दी गई। महोदय ने ध्वज को फहराने के लिए रस्सी को खींचा, लेकिन रस्सी की गांठ छुट्टी ही नहीं। महोदय ने फिर से रस्सी को खींचा, लेकिन रस्सी की गांठ छुटने का नाम नहीं ले रही थी। महोदय ने तीसरी बार रस्सी को जोर से झटका दिया और यकायक वातावरण बदल गया। आकाश में काले बादल मंडराने लगे। बिजली चमकने लगी। भयानक मेघ गर्जना होने लगी। यकायक ध्वज से एक दर्द भरी चीख सुनाई दी-"त्राहिमाम!!! त्राहिमाम!!! त्राहिमाम!!! एक समय था जब मुझे फहराने के लिए लोग अपनी जान की परवाह किए बिना अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने के लिए तैयार रहते थे। आज अपने ये यकायक मौसम की तरह बदल क्यों गएं? नहीं फहरना मुझे कागज के चंद टुकड़ों की खातिर अपने ईमान को बेच देने वाले व्यक्ति के हाथों। नहीं फहरना मुझे खुली हवा में। नहीं फहरना मुझे लहराती फिजाओं में। मुझे रस्सी की गांठ में ही बंद रहने दो। बंद रहने दो। बंद रहने दो।"

समीर उपाध्यायजिला: सुरेंद्रनगर, गुजरात

गलती से सीखकर, सुधारना ही सुखद जीवन का आधार हैं

एक संत यात्रा पर निकले। कई दिनों तक चलने के बाद एक गाँव आया, जहाँ उन्होंने विश्राम करने की सोची। उन्होंने अपने शिष्य से गाँव में खबर भिजवाई कि वे किसी सज्जन परिवार के घर भोजन करेंगे | संत को छुआछूत में विश्वास था|

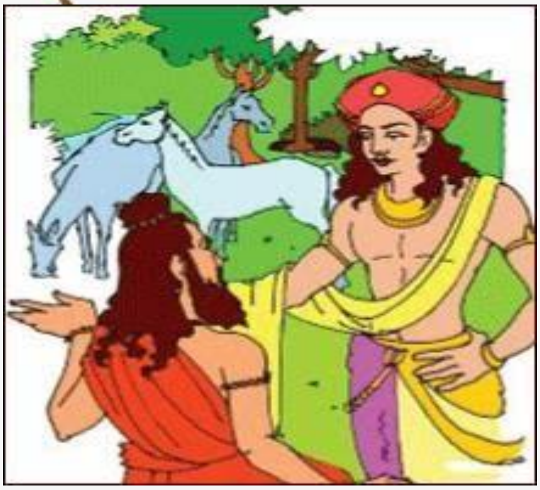

शिष्य यह संदेशा लेकर गाँव के हर एक घर के दरवाजे को ख़ट-खटाता हैं और कहता हैं, "हे सज्जन मेरे गुरुवर आज इसी गाँव में ठहरे हैं और उनका यह व्रत हैं कि वे किसी सज्जन शुद्ध आचरण वाले व्यक्ति के घर का ही भोजन ग्रहण करेंगे |क्या आप उन्हें भोजन करवाएंगे "? इस पर उस गाँववासी ने विनम्रता से हाथ जोड़कर कहा – "हे बंधू ,मैं निराअधम हूँ। मेरे अलावा इस गाँव में सभी वैष्णव हैं फिर भी अगर आपके गुरु मेरे घर आश्रय ले, तो मैं खुद को भाग्यशाली मानूंगा" | शिष्य गाँव के हर एक घर गया, पर सभी ने खुद को अधम और दूसरों को सज्जन कहा |

शिष्य ने गुरु के पास जाकर पूर्ण विस्तार से पूरी घटना सुनाई। यह सुन गुरु गाँव में आये और उन्होंने सभी से क्षमा मांगी कहा – "आप सभी सज्जन हैं, अधम तो मैं खुद हूँ जो ईश्वर के बनाये इंसानों में भेद कर रहा हूँ | आज आप सभी के साथ रुकना मेरे लिए सौभाग्य होगा इससे मेरा अंतःकरण शुद्ध होगा" |

इन्सान भगवान के बनाये हैं इन में कोई भेद नहीं होता | यह भेद देखने वाले की दृष्टि में होता हैं | यह संसार भगवान की देन हैं इसमें ऊँचा नीचा देखने वाले ही छोटी सोच के लोग हैं |
अपने आपको को इस तरह के अज्ञान से दूर करें जब भी अपनी गलती का अहसास हो उसे सुधारे जैसे कहानी में संत ने किया | गलती सभी से होती हैं पर उसे स्वीकार कर ठीक करने वाला महान होता हैं |

सदमार्ग चिंतामुक्त होता हैं

अवध देश के एक राजा थे,जो बहुत दयालु एवम न्याय प्रिय थे। जिसकी ख्याति अन्य राज्यों में भी फैली हुई थी।उनके न्याय के लिए सभी उनकी प्रशंसा करते थे। प्रजा को भी अपने राजा पर नाज़ था। न्यायसंगत राजा होता हैं तो प्रजा में खुशहाली होती हैं और प्रजा भी सदमार्ग पर ही रहती हैं।

एक दिन कि घटना थी। राजा के पुत्र ने एक गंभीर अपराध किया जिस पर प्रजा में बात होने लगी कि अब राजा क्या निर्णय लेंगे। लेकिन राजा ने अपने पुत्र को गंभीर अपराध की कड़ी सजा दी , पर इसके बाद भी राजा के लिए अपशब्द सुनाई देने लगे। प्रजा में काना फूसी शुरू हो गई। यह देख राजा अत्यंत दुखी थे।

एक दिन उन्होंने अपने विद्वान् मंत्री से इस विषय पर बात की कि हे महामंत्री ! हमने तो न्यायसंगत ही निर्णय लिया पर इस अपयश का क्या कारण हो सकता हैं ?

मंत्री ने सरलता से उत्तर दिया – हे महाराज जब आसमान में बदली छाती हैं तो एक छोटा सा बादल भी सूर्य के तेज को कम कर देता हैं लेकिन बादल छटते ही सूर्य अपने तेज के साथ पुनः निकलता हैं उससे उसकी ख्याति में कोई प्रभाव नहीं पड़ता। आपके बेटे से बड़ा अपराध हुआ हैं लेकिन आपका निर्णय न्याय संगत हैं इसलिए आपके यश में इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह सुनकर राजा को संतुष्टि का अनुभव हुआ और वे अपने कार्यों में लग गए।

कहानी की शिक्षा :

जब इंसान धर्म के मार्ग पर न्याय संगत निर्णय लेता हैं तो उसे डरने की जरुरत नहीं होती अगर सत्य मार्ग ही जीवन हैं तो मनुष्य को अपने कर्म करते रहना चाहिए किसी तरह के अपयश की चिंता में नहीं पड़ना चाहिये

उसी तरह जब राजा न्यायप्रिय होता हैं तो प्रजा में संतुष्टि का भाव होता हैं और वह राज्य समृद्ध और खुशहाल होता हैं।

बूँद बूँद से घड़ा भरता है

एक बार की बात है रोहन नाम का एक लड़का था। वह बहुत ही शरारती था। उसकी शरारतों से पूरे मोहल्ले के लोग परेशान रहते थे। वह शरारती होने के साथ – साथ पढ़ाई और खेल – कूद में भी काफी अच्छा था। उसकी शरारत के कारण पूरे मोहल्ले के लोग उसके पिता के पास उसकी शिकायत ले कर जाते थे। रोहन के पिता भी रोहन की शरारतों से बहुत तंग आ चुके थे, जिसके कारण मोहल्ले के लोगों से अक्सर रोहन के पिता का झगड़ा होता रहता था।

एक दिन रोहन के पिता ने रोहन को उसकी शरारत के लिए बहुत डांटा, उसे बाहर खेलने जाने से मना कर दिया और घर पर ही पढ़ाई करने को कहा। रोहन घर पर ही पढ़ाई कर रहा था और उसके पिता टेलीविजन देख रहे थे। टेलीविजन पर देश के प्रधानमंत्री मोदी जी का एक विज्ञापन आ रहा था, जिसमें वे देश को स्वच्छ रखने के लिए स्वच्छता अभियान के बारे में बता रहे थे। तभी रोहन की नजर टेलीविजन पर आ रहे मोदी जी के विज्ञापन पर पड़ी। वह बहुत ही ध्यान से मोदी जी के विज्ञापन को देखने लगा और उनके इस विज्ञापन से वह बहुत प्रभावित हुआ। उस दिन उसने मन में निश्चय कर लिया कि अब वह भी इस स्वच्छता अभियान से जुड़ेगा और देश को स्वच्छ करने में उनकी मदद करेगा।

दूसरे दिन रोहन सुबह उठा और मोहल्ले के सभी लोगों को इकट्ठा करके मोहल्ले में सफाई के लिए बोलने लगा, किन्तु लोगों को लगा रोहन की इसमें भी कोई शरारत होगी और वह उनको परेशान करने के लिए यह सब बोल रहा है। मोहल्ले वालों ने रोहन से कहा कि –"हम लोग तुम्हारी बातों में नहीं आएंगे, तुम बहुत शरारती हो और इसमें भी तुम्हारी कोई शरारत छिपी होगी"। फिर रोहन ने कहा कि – "मैं कोई शरारत नहीं कर रहा हूँ, सच में मैं देश को स्वच्छ रखने में आपका साथ देना चाहता हूँ, इसलिए आप लोगों को भी उनका साथ देने के लिए बोल रहा हूँ"। लोग रोहन की बातें सुन कर हंसने लगे और वहाँ से जाने लगे। रोहन ने उनको रोकने की बहुत कोशिश की, किन्तु मोहल्ले वालों ने उसकी एक ना सुनी और रोहन को डांटते हुए वहाँ से चले गए।

इसके बाद रोहन ने सोचा कि –"मैं अकेले ही यह काम करूँगा" और रोहन ने मोहल्ले में सफाई करनी चालू कर दी। लोगों को लगा कि "रोहन यह सब जोश में आ कर कर रहा है कुछ देर बाद जब थक जायेगा तो अपने आप शांत हो जायेगा"। तीसरे दिन रोहन फिर से सुबह उठा और मोहल्ले में सफाई के लिए चल पड़ा। लोगों ने फिर से उसे काम करते देखा तो सोचा कि यह कुछ दिन ऐसा करेगा और फिर थक कर अपने घर चला जायेगा। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। रोहन को ऐसा करते करते 5-6 दिन हो गए और वह इस काम में जुटा रहा। मोहल्ला काफी हद तक साफ हो गया था। लोगों को रोहन को इस तरह काम करते और मोहल्ले में सफाई देख कर लगने लगा कि वह सही कह रहा था। किन्तु तब भी लोगों ने उसका साथ नहीं दिया।

फिर अगले दिन वह सुबह उठा और रोज की तरह ही सफाई के काम पर चल पड़ा। इस बार मोहल्ले के एक व्यक्ति ने उसको काम करते देखा और उसका साथ देने के लिए गए। फिर रोहन का उस दूसरे व्यक्ति ने मोहल्ले की सफाई

में साथ दिया। अगले दिन फिर उस व्यक्ति ने रोहन का साथ दिया, उन दोनों को यह काम करते देख मोहल्ले के कुछ लोग और आ कर उसका साथ देने लगे, जिससे मोहल्ले की सफाई और भी जल्दी होने लगी। फिर कुछ दिन ऐसा ही चलता रहा, एक

दिन जब रोहन सफाई के लिए घर से बाहर जाने लगा, तब उसके पिता ने उससे कहा कि –"रोहन रुको मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ" और रोहन के पिता ने भी सफाई में रोहन का साथ दिया और सफाई करनी शुरू कर दी।

इस प्रकार एक – एक करके मोहल्ले के सारे लोगों ने रोहन का साथ दिया और सभी सफाई के काम में जुट गए। रोहन को मोहल्ले के सभी लोगों को उसका साथ देते देख बहुत ख़ुशी हुई। उस समय रोहन की एक कोशिश ने मोहल्ले का पूरा नक्शा बदल कर रखा दिया था। फिर सारे लोग रोहन का साथ देते हुए मोहल्ले के बाहर जा कर भी लोगों को इसके लिए प्रेरित करने लगे। जिस तरह रोहन ने अपने मोहल्ले को स्वच्छ करने की ठान ली और एक – एक करके मोहल्ले के सभी लोगों ने उसका साथ दिया। उसी तरह यदि देश का हर एक नागरिक एक – एक करके देश को स्वच्छ रखने की ठान ले, तो भारत देश को बहुत ही जल्द एक साफ और सुन्दर देश में परिवर्तित किया जा सकता है। "बूँद – बूँद से घट भरता है", रोहन ने जिस प्रकार इस मुहावरे को सच कर दिखाया है उसी तरह हमें भी उसका साथ देना चाहिए इसके लिए सभी को कोशिश करनी होगी।

मेहनत की कमाई

किसी शहर में एक प्रोफेसर साहब रहते थे। उनका बेटा बहुत आलसी था। उसे जब भी वे कोई काम कहते, तो उसके पास उस काम को न करने के कई बहाने होते, उसके इस आदत से वे परेशान थे।

बेटा अब बड़ा हो चला था और पढ़ाई भी पूरी कर ली थी, पर उसकी आदत में कोई सुधार न था।

एक दिन प्रोफेसर साहब ने बेटे को बुलाया और गुस्से से कहा, तुम इतने बड़े हो गए, दिन भर घर में पड़े रहते हो, आज घर से निकलो, कुछ कमा कर ही घर आना, वरना तुम्हें आज खाना नहीं मिलेगा।

पिता की बात सुन कर दुखी मन से बेटा बाहर निकला और घर के बाहर ही पिता के काम पर जाने का इंतज़ार करने लगा। पिता के जाने के बाद वह घर आया और अपनी माँ को सारी बात कह रोने लगा।

माँ का कलेजा पसीज गया और उसने एक 100 रूपये बेटे को दे दी। शाम को पिता वापस घर आए, तो उन्होने बेटे से कमाई के बारे में पूछा।

बेटे ने वह 100 रूपये को पिता के सामने रख दिया। पिता समझ गए गए कि माँ ने इसकी मदद की है। पिता ने बेटे से कहा ? इस पैसे को नाली में फेंक दो। बेटा पैसा नाली में फेंक आया।

अगले दिन प्रोफेसर साहब की पत्नी किसी काम से मायके चली गयी। उन्होने फिर बेटे को बुलाया और कहा – आज फिर कुछ कमा लाओ, बगैर कमाए लौटे तो खाना नहीं मिलेगा।

बेटा बाहर निकला और पिता के काम पर जाते ही घर आकर अपनी बहन से सारी बात बता कर रोने लगा, भाई को रोते देख बहन ने उसे 50 रुपये दे दिये।

शाम को जब पिता आए, तो बेटे ने वो 50 रुपये उनके सामने रख दिये। पिता समझ गए की आज बहन ने उसकी मदद कर दी। उन्होने कहा, इस रूपये को पास की नाली में फेंक आओ। बेटा उसे फेंक आया।

अगले दिन प्रोफेसर ने अपनी बेटी को उसकी सहेली के यहाँ भेज दिया और बेटे से कहा, आज भी तुम्हें कुछ कमा कर ही लौटना है।
बेटा बाहर निकला पर आज उसकी मदद करने वाला कोई नहीं था। थक हार कर वह एक जगह खड़ा हुआ, तो सामने सीमेंट का गोदाम था।
वह गोदाम में गया और मैनेजर से बोला, सर , क्या मुझे कोई काम मिलेगा? मैनेजर ने कहा, यदि तुम इन सीमेंट की बोरियों को उठा कर ट्रक पर डाल सकते हो, तो यह काम मैं तुमको दे सकता हूँ।
कोई अन्य चारा न देख लड़के ने बोरी उठानी शुरू कर दी। काम खत्म होने के बाद मिले 50 रुपये को ले कर वह घर पहुंचा। पिता लौटे, तो उसने वो 50 रुपये उनके सामने रख दिया।
पिता ने उन रुपयों को पास की नाली में फेंकने को कहा, तो बेटा आँखों में आँसू भर कर बोला, पिताजी, इन रुपयों को कमाने में मेरी कमर टूट गयी, कंधों में चोट आ गयी, पूरा शरीर दर्द कर रहा है और आप मुझे इन्हे नाली में फेंकने को कह रहे है।
पिता मुस्कुराए और बोले, बेटा, आज तुमने मेहनत से कमाए पैसे की कदर को समझ लिया, मैं तुम्हें यही अहसास करना चाहता था। यह कहकर पिता ने बेटे को गले से लगा लिया क्योंकि उस दिन उसने मेहनत की कमाई की कीमत को समझ चुका था।

समस्या का समाधान

किसी शहर में एक व्यक्ति था, वह हमेशा दुखी रहा करता था, उसे हमेशा ऐसा लगता था कि उससे दुखी व्यक्ति संसार में और कोई नहीं है। जब भी कोई उससे बात करता तो वह अपनी समस्याओं का बखान करने लगता ।
थोड़ी देर में साथ वाला व्यक्ति उठ कर चला जाता। इस बात से तो वह और परेशान हो जाता कि उसकी बात कोई सुनने वाला नहीं है।
एक दिन उसे पता चला कि शहर में कोई महात्मा आने वाले है। जिनके पास सभी समस्याओं का समाधान है। यह जानकार वह महात्मा के पास पहुंचा। उस महात्मा के साथ हमेशा एक काफिला चला करता था जिसमें कई ऊंट भी थे ।
महात्मा के पास पहुँच कर उस व्यक्ति ने कहा – गुरुजी, मैंने आपका बड़ा नाम सुना है कि आप सभी समस्याओं का समाधान करते है। मैं बहुत दु:खी व्यक्ति हूँ। मेरे इर्द-गिर्द हमेशा बहुत सारी समस्याएँ रहती है। एक को सुलझाता हूँ तो दूसरी पैदा हो जाती है।
मैं अपनी आपबीती किसी को सुनाता हूं तो कोई सुनता ही नहीं है। दुनिया बड़ी मतलबी हो गयी है। अब आप ही बताइये क्या करूँ ?
महात्मा ने उसकी बातें ध्यान से सुनी और कहा – भाई, मैं अभी तो बहुत थक गया हूँ परंतु कल सुबह मैं तुम्हारी समस्या का समाधान अवश्य करूंगा।

इस बीच तुम मेरा एक काम कर दो, मेरे ऊंटों की देखभाल करने वाला आदमी बीमार है। आज रात तुम इनकी देखभाल कर दो। जब सभी ऊंट बैठ जाये तब तुम सो जाना। मैं तुमसे कल सुबह बात करूंगा।

अगले दिन महात्मा ने उस आदमी को बुलाया। उसकी आंखे लाल थी। महात्मा ने पूछा – तो बताओ कल रात कैसी नींद आयी ? व्यक्ति बोला – गुरुजी, मैं तो रात भर सोया ही नहीं। आपने कहा था जब सभी ऊंट बैठ जाये तब सो जाना।

पर ऐसा नहीं हुआ जब भी कोशिश करके एक ऊंट को बिठाता दूसरा खड़ा हो जाता। सारे ऊंट बैठा ही नहीं इसीलिए मैं भर रात सो नहीं सका।

महात्मा जी ने मुस्कुराते हुए कहा – मैं जानता था कि इतने ऊंट एक साथ कभी नहीं बैठ सकता, फिर भी मैंने तुम्हें ऐसा करने को कहा। यह सुनकर व्यक्ति क्रोधित होकर बोला – महात्मा जी, मैं आपसे हल मांगने आया था पर आपने भी मुझे परेशान कर दिया।

महात्मा बोले – नहीं भाई, दरअसल यह तुम्हारे समस्या का समाधान है। संसार के किसी भी व्यक्ति की समस्या इन ऊंटों की तरह ही है। एक खत्म होगी तो दूसरी खड़ी हो जाएगी।

अतः सभी समस्याओं के खत्म होने का इंतज़ार करोगे तो कभी भी चैन से नहीं जी पाओगे। समस्याएँ तो जीवन का ही अंग है। इसे महसूस करते हुए जीवन का आनंद लो। जीवन में सहज रहने का यही एक उपाय है।

दुनिया के किसी भी व्यक्ति को तुम्हारी समस्याएँ सुनने में कोई दिलचस्पी नहीं है क्योंकि उनकी भी अपनी समस्याएँ है। महात्मा जी की बात सुनकर व्यक्ति के चेहरे पर संतोष और सहजता के भाव उमड़ पड़े। मानो उसे अपनी सभी समस्याओं से निपटने का अचूक मंत्र प्राप्त हो गया हो।

अपनी मदद खुद करें

किसी गाँव में एक पुजारी रहता था वो भगवान का बहुत बड़ा भक्त था। एक बार उसके गाँव में बाढ़ आई। गाँव के सभी लोग जरूरत का सामान लेकर ऊंचे स्थान की ओर जाने लगे जाते-जाते लोगों ने पुजारी को भी चलने को कहा पर पुजारी ने कहा कि तुम लोग जाओ मुझे विश्वास है कि भगवान मेरी रक्षा करने जरूर आएगा।

पुजारी भगवान का इंतज़ार करने लगा। तभी एक जीप पुजारी के सामने आकर रुका। जीप में बैठे लोगों ने पुजारी को चलने को कहा पर पुजारी ने फिर वही जवाब दिया, तुम लोग जाओ मुझे तो भगवान बचाने आएगा।

पानी बढ़ता ही जा रहा था। कुछ समय बाद एक नाव वाला पुजारी के पास आया और चलने को कहा पर पुजारी ने उससे भी वही बात कही।

पानी अब कंधे तक आ गया था पर पुजारी को अब भी विश्वास था कि भगवान उसे बचाने जरूर आएगा। पानी और बढ़ने पर वो घर के छत पर चढ़ गया और भगवान का इंतज़ार करने लगा।

थोड़ी देर में एक बचाव हेलिकॉप्टर आता है और ऊपर से रस्सी फेंकते हुए पुजारी को पकड़ लेने को कहता है; पर अब भी पुजारी वही बात दोहराता है कि तुम लोग जाओ मुझे तो भगवान बचाने आएगा पानी बढ़ता गया।

आखिरकार पानी इतना बढ़ गया कि पुजारी उसमें डूब गया और मर गया। मरने के बाद जब वो भगवान के पास पहुंचा तो भगवान पर चिल्लाते हुए उसने कहा कि मैं आपका इतना बड़ा भक्त था।

मुझे पूरा विश्वास था कि आप बचाने आएंगे। मैं इंतज़ार करता रहा पर आप नहीं आए, क्यो ? भगवान ने कहा मैं तो तीन बार तुम्हें बचाने की कोशिश की पर तुम खुद ही बचना नहीं चाहता थे।

पहली बार मैंने तुम्हारे लिए जीप भेजा तुम नहीं आए। दूसरी बार मैंने तुम्हारे लिए नाव भेजा पर तुम नहीं आए। तीसरी बार मैंने तुम्हारे लिए हेलिकॉप्टर पर फिर भी तुम नहीं आए। तो मैंने तुम्हारे विश्वास को नहीं तोड़ा बल्कि तुमने खुद ऐसा किया।

राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु स्थापित जांचबिन्दु-

1. संबंधित अधिकारी राजभाषा अधिनियम ,1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले निम्न कागजात पर हस्ताक्षर करने से पूर्व यह सुनिश्चित करें कि ये द्विभाषी जारी हो रहे हैं।

2. हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए जायेंगे।

3. क्षेत्र में भेजे जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पते हिन्दी में लिखे जायें। 'ख' और 'क'

4. क्षेत्र के लिए निर्धारित हिन्दी पत्रों के निम्न लक्ष्य प्राप्ति हेतु भरसक प्रयास करेः 'ग' 'ख' 'क'

- 'क' - 100%
- 'ख' - 100%
- 'ग' - 100%

5. कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले रजिस्टरों के शीर्षक द्विभाषी रूप में होने चाहिए।

6. रबड़ की मोहरेंयह सुनिश्चित किया जाये। ,द्विभाषी हों ,नामपट्ट ,पत्र शीर्ष ,साईन बोर्ड ,

7. कार्यालय में प्रयोग में लाये जाने वाले सभी कोड ,प्रक्रिया साहित्य ,नामपट्ट सूचनापट्ट ,फार्म ,मैनुअल ,बैनर आदि द्विभाषी होने चाहिए।

8. कार्यालय में प्रयोग किए जा रहे कम्प्यूटरों पर द्विभाषी सॉफ्टवेयर यूनिकोड एनकोडिंग लोड कराया जाए तथा हिन्दी का प्रगामी प्रयोग बढ़ाया जाए।

9. राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के प्रत्येक मद का अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।

10. सेवा पंजियों में प्रविष्टियों हिन्दी में की जाएं।

11. राजभाषा अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अनुसार जो पत्र परिपत्र आदि हिन्दी में या हिन्दी , और अंग्रेजी में जारी होने चाहिए या जो प्रलेख हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार किएजाने हों वे उसी , यह देखने की जिम्मेदारी पत्र या प्रलेख पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की है। अतः ,रूप में जारी होते हैं में या द्विभाषी रूप में जारी किए जाएं।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेज

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित, 1967) की धारा 3 (3) के अंतर्गत निम्नलिखित सभी दस्तावेज आदि अनिवार्य रूप से द्विभाषी अथवा हिंदी में जारी होने चाहिए-

- सामान्य आदेश/General Orders
- संकल्प/Resolution
- परिपत्र/Circulars
- नियम/Rules
- प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन/Administrative & Other Reports
- प्रेस विज्ञप्तियां/Press Release
- संविदाएं/Contracts
- करार/Agreement
- अनुज्ञप्तियां/Licences
- निविदा प्ररूप/Tender Form
- अनुज्ञा-पत्र/Permits
- निविदा सूचनाएं/Tender Notices
- अधिसूचनाएं/Notifications
- संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज-पत्र/Reports & documents to be laid before the Parliament

उक्त दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि उपरोक्त दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में जारी किया जा रहा है।

हिन्दी कार्यशालाएं

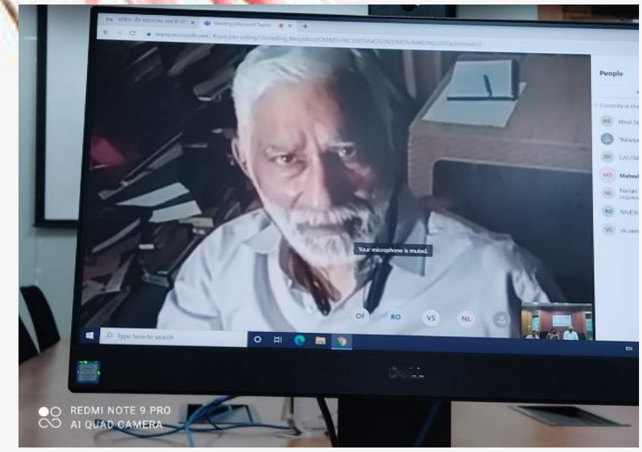

हिन्दी अकादमीदिल्ली से साहित्यकार सम्मान एवं कृति सम्मान प्राप्त श्री महेश दर्पण ,

विज्ञान प्रसारनोएडा से राजीव गाँधी राष्ट्रीय , ज्ञान विज्ञान सम्मान प्राप्त डॉमनीष मोहन गोरे .

डॉ मनीषा नारायण ,भारतीय खाद्य संरक्षण एवं मानक प्राधिकरण ,उपनिदेशक , स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग

हिन्दी पखवाड़ा

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा जारी राजभाषा प्रतिज्ञा लेते हुए सचिव ,एवं अन्य कार्मिक

पुरस्कार वितरण समारोह

वर्ष 2019–2020 एवं 20–21 का राजभाषा कीर्ति शील्ड सभी कर्मचारियों को समर्पित करते हुए/अधिकारियों

टीचर : संसार में कितने देश हैं
गप्पू : मैडम, केवल – एक
टीचर : नालायक, इतना भी नहीं पता
गप्पू : मैडम, केवल एक हमारा ही देश है बाकी सब तो विदेश हैं

गप्पू : डॉक्टर साहब चश्मा बनवाना है
डॉक्टर : चश्मा किसके लिए बनवाना है?
गप्पू : टीचर के लिए
डॉक्टर : पर क्यों?
गप्पू : क्योंकि उन्हें मैं हमेशा गधा ही नजर आता हूं

पहले लोग नाराज होते थे
तो घर आना बंद कर देते थे
अब नाराज होते हैं
तो ऑनलाइन आना बंद कर देते हैं
हकीकत वही सोच नई

तभी कम होगा
जब आप इनकी पत्तियां तोडने
खुद पहाड़ पर जाओगे

एक कुंवारे ने विज्ञापन दिया
मेरी शादी कराओ, नहीं तो मैं योगी बन जाऊँगा।
कांग्रेस वाले 200 लड़कियाँ लेकर पहुँच गये।
ख़ौफ इसको कहते हैं।।

हरियाणवी लड़का बस में जा रहा था,
कंडक्टर – टिकट ले ले जल्दी
लड़का – एक मेरी मम्मी की और आधी टिकट मेरी बना दे
कंडक्टर – तेरी तो मूंछें भी आ रही हैं, पूरा टिकट लगेगा
लड़का - तो मेरी मम्मी की तो मूंछें नहीं हैं
उसकी आधी बना दो